भैरवयात्रा

'कृत्यकल्पतरू' में भेरवयात्रा का कोई उल्लेख नहीं है, परन्तु काशीखण्ड में आठों दिशाओं में आठों भैरवों की स्थापना का वर्मन है।

रूरूश्चण्डोसिताङ्गश्च कपाली क्रोधनस्तथा।
उत्मत्तभैरवस्तद्वत्क्रमात्संहारभीषणौ।।२८

इस वाक्य में से 'तद्वत्क्रमात' इस पद से यह स्पष्ट है कि ये क्रमपूर्वक आठों दिशाओं में प्रतिष्ठित थे। वर्तमान यात्राक्रम में यह दिशाओंवाली बात नहीं मिलती । यह भी एक उन समस्याओं में से है, जिसका समाधान ढूँढ़ना होगा। एक हस्तलिखित तालिका में एक श्लोक मिलता है, परन्तु यह कहाँ है, यह उसमें नहीं लिखा है।

असिताङ्गो रूरूचण्डो क्रोध उन्मत्तभैरवः।
कपाली भीषणश्चैव संहारोऽष्टम एव च ।।

इस समय से अष्टभैरव - यात्रा होती है, उनके स्थान इस प्रकार है :

१.	रूरूभैरव	:	१. हनुमान घाट पर या २. गोमठ पर।
२.	चण्डभैरव	:	दुर्गाकुण्ड पर।
३.	असितांगभैरव	:	वृद्धकाल में।
४.	कपालीभैरव	:	लाटभैरव।
५.	क्रोधनभैरव	:	कामाक्षा देवी के मन्दिर में।
६.	उन्मत्तभैरव	:	भीमचण्डी के पास देवरा गाँव में।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

७. संहारभैरव : पाटन दरवाजे के पास (मकान नं० ए० १/८३ में)

८. भीषणभैरव : भूतभैरव सप्तसागर महल्ले में।

इनके अतिरिक्त काशीखण्ड में कंकालभैरव का भी उल्लेख है और वे मणिकर्णिका के समीप मकान नं० सी० के० ८/१८० में गली में है। भैरवयात्रा प्रत्येक मास की अष्टमी तथा चतुर्दशी तथा प्रत्येक रविवार और मंगलवार को होती है। वर्तमान काल में कालभैरव-यात्रा का विशेष प्रचार है। अन्य भैरवपीठों की यात्रा कभी-कभी ही कोई-कोई भक्त करते हैं।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.